एमी अवॉर्ड्स में चमके दिलजीत दोसांझ

इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स 2025 की चमचमाती रात भारत के लिए बेहद खास रही. न्यूयॉर्क सिटी में आयोजित इस प्रतिष्ठित समारोह में भारतीय सिंगर और एक्टर दिलजीत दोसांझ ने अपने ग्लोबल चार्म, क्लास और स्टाइल से अंतरराष्ट्रीय मंच पर सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया.

दिलजीत की ओटीटी फिल्म अमर सिंह चमकीला इस साल के 53वें इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स में दो महत्वपूर्ण श्रेणियों बेस्ट टीवी मिनी मूवी/सीरीज और बेस्ट परफॉर्मेंस बाय एन एक्टर के लिए ऑफिशियल नॉमिनेशन सूची में शामिल हुई. एमी नाइट में दिलजीत दोसांझ की उपस्थिति हर तरफ चर्चा का विषय बनी रही. उनका एमी अवॉर्ड्स का रेड कारपेट लुक ब्लैक पगड़ी, ऑफ-व्हाइट शर्ट और शिमरी ब्लेजर—क्लासिक, एलीगेंट और पूरी तरह ग्लोबल अपील वाला था. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर दिलजीत की तस्वीरें और वीडियो हजारों शेयर के साथ वायरल हो गए. फैंस ने इसे 'ग्लोबल स्टार मोमेंट' कहा.

अमर सिंह चमकीला को इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड्स की दो बड़ी कैटेगरी में जगह मिलने के बाद भारतीय ओटीटी और म्यूजिकल बायोपिक क्रिएटर्स के आत्मविश्वास में बड़ा इजाफा हुआ है. निर्देशक इम्तियाज अली ने कहा कि इस फिल्म के लिए दिलजीत का समर्पण असाधारण रहा और यह नॉमिनेशन पूरी टीम के लिए सम्मान की बात है. समारोह में दुनिया भर की लोकप्रिय टीवी मिनी सीरीज, फिल्मों और अभिनेताओं ने हिस्सा लिया, लेकिन भारतीय कलाकारों को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान ने देश के फैन्स को गर्व महसूस कराया.

एक अच्छे लेखक को जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए : हिरानी

बॉलीवुड के जानेमाने फिल्मकार राज कुमार हिरानी का कहना है कि एक अच्छे लेखक को जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए क्योंकि वास्तविक अनुभव ही कहानियों को अविश्वसनीय, अद्वितीय और अत्यंत आकर्षक बनाते हैं. भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (इफ्फी) में ''फिल्म, लेखन और संपादन के दो मेज़ों पर बनती है : एक परिप्रेक्ष्य' विषय पर आयोजित मास्टर क्लास-सह-कार्यशाला को संबोधित करते हुये राज कुमार हिरानी ने कहा कि लेखन कल्पनाशीलता है, संपादन अनुभव की भावना. लेखक पहला मसौदा लिखता है, जबकि संपादक उसे आखिरी शक्ल देता है.

विषयवस्तु फिल्म की आत्मा होती है, जबकि कहानी में संघर्ष इसका प्राण वायु होता है. हिरानी ने कहा कि लेखक स्वप्न देखने का स्थान है. लेखक के सामने कल्पना की असीम स्वतंत्रता होती है - असीमित आकाश, सुहावना सूर्योदय, मंझे हुए कलाकार, बजट और किसी बंधन की चिंता नहीं. लेकिन जैसे ही ये कल्पित दृश्य संपादक की मेज़ पर पहुंचते हैं, वास्तविकता इसमें बदलाव ला देती है. हिरानी ने कहा कि एक फिल्म तभी शुरू होती है, जब कोई किरदार सचमुच कुछ चाहता है और यही चाहत कहानी की धड़कन बन जाती है.

इसमें उसका संघर्ष प्राण वायु है,जिसके बिना, कुछ भी नहीं धड़कता. हिरानी ने लेखकों से अपनी कहानियां जीवंत अनुभवों पर रचने को कहा. उन्होंने कहा कि एक अच्छे लेखक को जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए क्योंकि वास्तविक अनुभव ही कहानियों को अविश्वसनीय, अद्वितीय और अत्यंत आकर्षक बनाते हैं. उन्होंने कार्यशाला में प्रतिभागियों को यह भी स्मरण कराया कि प्रस्तुति को स्क्रीन नाट्य स्वरूप में अदृश्य रूप से बुना जाना चाहिए, और फिल्म का विषय, उसकी आत्मा हर दृश्य में अप्रत्यक्ष रूप से मौजूद होनी चाहिए.

हिरानी ने अपने पहले प्रेम, संपादन, के बारे में उत्साहपूर्वक चर्चा करते हुए फिल्म संपादन की गहरी, लेकिन छिपी हुई शक्ति के बारे में बताया. उन्होंने कहा कि जब फुटेज संपादक की मेज पर पहुंचती है, तो वहां सब कुछ बदल जाता है. फिल्म संपादक कहानी को दोबारा नए सिरे से गढ़ता है. वह ऐसा गुमनाम नायक है जिसका काम अदृश्य होता है, लेकिन वही फिल्म के प्रवाह को बनाए रखता है.संपादक के टूलकिट का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि संपादन की इकाई फिल्म शॉट है, लेकिन कोई एकल शॉट, अगर किसी अलग संदर्भ में रख दिया जाए तो अर्थ पूरी तरह बदल जाता है.

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि यह इतना शक्तिशाली होता है कि एक फिल्म संपादक किसी कहानी को पूरे 180 डिग्री पलट सकता है. हिरानी ने ज़ोर देकर कहा कि खलनायकों का दृष्टिकोण भी नायक जितना ही मज़बूत होना चाहिए. उन्होंने कहा कि हर किरदार को लगता है कि वह सही है और यहीं से कहानी को ऊर्जा मिलती है. अपने-अपने सच का यही टकराव, नज़रियों के बीच का यही तनाव, कहानी को गतिशील बनाता है.

डिस्कवरी लेकर आ रहा है निठारी

निठारी हत्याकांड ने लगभग दो दशकों पहले पूरे देश को हिला दिया था. अब वॉर्नर ब्रदर्स डिस्कवरी और त्रिनेत्र ने घटना स्थल पर लौट कर निठारी: ट्रुथ, लाइज़ मर्डर पेश किया है. भारत के सबसे भयावह वास्तविक अपराधों में से एक की गहराई से पड़ताल करती है.

निठारी: ट्रुथ, लाइज़ मर्डर में मोनिंदर सिंह पंढेर पहली बार ऑन-कैमरा दिखाई दे रहे हैं और वे अपने घटनाक्रम का अपना पक्ष पेश करते हैं. सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद, जिसमें सुरिंदर कोली की अंतिम सजा को रद्द कर दिया गया है, यह डॉक्यूमेंटरी ऐतिहासिक और अपने तरह की पहली डॉक्यूमेंट्री है.

साउथ एशिया, वॉर्नर ब्रदर्स डिस्कवरी — हेड ऑफ फैक्टुअल एंटरटेनमेंट, लाइफस्टाइल किड्स साई अभिषेक ने कहा, 'वॉर्नर ब्रदर्स डिस्कवरी में हम हमेशा ऐसी कहानियों की ओर खिंचे चले आते हैं जो दिखने वाली सतह से परे देखने के लिए उकसाती हैं, वे कहानियाँ जो लंबे समय तक असर छोड़ती हैं क्योंकि वे समाज के बारे में कुछ गहरा बताती हैं. निठारी मामला ऐसी ही एक कहानी है: हैरान करने वाला, जटिल और अभी भी अनसुलझे सवालों में घिरा हुआ.

स्नेधु की जादुई केमिस्ट्री का राज

ज़ी टीवी पर हाल ही में शुरू हुए सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले शोज़ में से एक, 'गंगा माई की बेटियां' बहुत कम समय में दर्शकों के दिलों में अपनी जगह बना चुका है और टीआरपी चार्ट्स में लगातार टॉप 10 में बना हुआ है. शो को इसकी मजबूत कहानी के साथ साथ इसके मुख्य किरदारों स्नेहा और सिद्धू के बीच की शानदार केमिस्ट्री के लिए भी खूब पसंद किया जा रहा है. अमनदीप सिद्धू और शीज़ान खान द्वारा निभाए जा रहे इन किरदारों की केमिस्ट्री जितनी ऑन स्क्रीन चमकती है, उतनी ही ऑफ स्क्रीन उनकी 'स्नेधु रील्स' भी पॉपुलर हो चुकी हैं. ये दोनों एक्टर्स बताते हैं कि स्नेहा और सिद्ध की केमिस्ट्री का असली जादू कैमरे के पीछे उनकी सच्ची दोस्ती से निकलता है. अपने और अमनदीप के रिश्ते के बारे में बात करते हुए शीज़ान खान ने कहा, 'एक बहुत प्यारी दोस्ती है. भले ही हम कभी मुंह पर एक दूसरे की तारीफ न करें या बच्चों की तरह लड़ते रहें, लेकिन हमारे दिलों में एक दूसरे के लिए इज्जत है.

शर्तान संग तुलसी ने मचाई धूम

डांस-पॉप ट्रैक में दिखा तुलसी का नया अवतार

तुलसी कुमार अपने नए डांस-पॉप ट्रैक 'शर्तान' के साथ एक बार फिर म्यूजिक लवर्स को झूमने पर मजबूर कर रही हैं. यह गाना सिर्फ एक डांस नंबर नहीं, बल्कि आज की आत्मनिर्भर, बेखौफ़ और खुद को फिर से गढ़ने वाली महिला की आवाज़ भी है.

तुलसी पहली बार इस तरह के बोल्ड, फ्यूज़न और हाई-एनर्जी स्टाइल में नज़र आ रही हैं, जो उनके म्यूजिक जर्नी में एक बड़ा मोड़ माना जा रहा है. गाने की खासियत है इसका इंटरनेशनल साउंड, ग्लोबल पॉप एनर्जी और फ्रीस्टाइल डांस का कंप्लीट ब्लेंड, जो इसे युवाओं की नई फेवरेट प्लेलिस्ट बना सकता है. अभिजीत श्रीवास्तव के संगीत और शायरा के शब्दों ने इस ट्रैक को आधुनिकता के साथ भावनात्मक स्वतंत्रता की ताकत भी दी है. वीडियो में तुलसी के चार अलग-अलग लुक्स उनके बदलते कॉन्फिडेंस और एटीट्यूड का प्रतीक हैं, जो दर्शकों को कहता है 'अब आंसू नहीं, पावरफुल कमबैक का वक्त है.'

रंजू वर्गीज द्वारा निर्देशित यह वीडियो रंगों, मूवमेंट और ग्लॉसी विज़ुअल्स का जबरदस्त मेल है, जिसमें एक डॉलहाउस-थीम के भीतर आत्मविश्वास का क्रिएटिव तूफ़ान दिखता है. 'शर्तान' आज की महिलाओं की कहानी है, जो टूटने के बाद और भी मज़बूत होकर लौटती हैं. गाने का थीम एक ऐसी महिला के इर्द-गिर्द घूमता है, जिसे धोखा मिला है, लेकिन वह टूटती नहीं—बल्कि और अधिक दमदार होकर अपने आप को री-डिफाइन करती है.

शिल्पा का जलवा

शिल्पा शेट्टी एक बार फिर सुर्खियों में हैं और इस बार वजह है उनका ऐसा फोटोशूट, जिसने धूम मचा दी है. 90 के दशक से लेकर आज तक अपनी फिटनेस, फैशन और एवरग्रीन ब्यूटी से फैंस को दीवाना बनाने वाली शिल्पा अब एक रेट्रो-मॉर्डन फ्यूजन लुक के साथ सामने आईं, जिसने हर किसी को चकित कर दिया. एक्ट्रेस ने अपने नए शूट की कई तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर कीं, जिन्हें देखते ही देखते लाखों लाइक्स और तारीफों की लाइन लग गई. उन्होंने ट्यूब-टॉप डिजाइनर ब्लाउज के साथ धोती-स्टाइल साड़ी को बेहद स्टाइलिश अंदाज़ में कैरी किया है. यह आउटफिट न सिर्फ यूनिक है बल्कि इसमें एक तरह की शाही एलिगेंस भी देखने को मिलती है. उनके लुक में रेट्रो वाइब और मॉर्डन ग्लैम का संतुलन इतनी खूबसूरती से दिखा कि फैंस देखते ही देखते दीवाने हो गए.

उनके मेकअप और हेयरस्टाइल ने तस्वीरों का आकर्षण और बढ़ा दिया.

कृति ने धनुष को कहा अद्भुत कलाकार

धनुष और कृति सैनन स्टारर फिल्म 'तेरे इश्क़ में' रिलीज़ से पहले ही धमाल मचा चुकी है. ए.आर. रहमान का एल्बम चार्ट्स पर ट्रेंड कर रहा है, ट्रेलर को जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल रहा है और दर्शक इस नयी ऑन-स्क्रीन जोड़ी को लेकर बेहद उत्साहित हैं. इसी बीच कृति सैनन ने फिल्म के शूट से जुड़ा अपना ताज़ा अनुभव साझा किया है, जिसमें उन्होंने धनुष की एक्टिंग, उनकी समझ और उनके साथ काम करने के अंदाज़ की जमकर तारीफ़ की है.

उन्होंने बताया कि धनुष संग काम करना उनके लिए एक बेहद समृद्ध अनुभव रहा और दोनों ने मिलकर ऐसे सीन रचे जो खुद उन्हें भी बार-बार दंग कर देते थे. कृति ने कहा कि धनुष एक अद्भुत अभिनेता हैं, जिनकी क्राफ्ट पर पकड़ बेहद गहरी है. वह न केवल अभिनय में माहिर हैं बल्कि निर्देशन और कहानी की समझ उन्हें हर दृश्य में एक अलग संवेदनशीलता देने में मदद करती है. कृति के शब्दों में— 'धनुष के साथ काम करना मेरे लिए एक क्रिएटिव हाई जैसा था. उनके पास इतनी परतें हैं कि हर सीन में कुछ नया सीखने को मिल जाता है. 'उन्होंने यह भी बताया कि फिल्म की कहानी के कई हिस्सों में उनके और धनुष के बीच बेहद इंटेंस और लंबे सीन थे, जिन्हें दोनों ने एक-दूसरे की ऊर्जा पर फीड होकर निभाया. यही कारण है कि शूट खत्म होने के बाद अक्सर दोनों एक-दूसरे से कहते 'यह वाला सीन कमाल का हुआ!' कृति ने माना कि दोनों की केमिस्ट्री इस वजह से और नैचुरल बन पाई क्योंकि वे ऑफ-स्क्रीन पहली बार मिले थे.

कृषि जगत

गुड़ सेहत का मीठा खज़ाना

सर्दियों का मौसम अपने साथ कई बदलाव लेकर आता है—ठंडी हवाएँ, कम तापमान और शरीर की ऊर्जा का तेज़ी से खर्च होना. ऐसे में खानपान में कुछ ऐसी चीज़ें शामिल करना ज़रूरी होता है जो शरीर को गर्माहट भी दें और रोगों से बचाने की ताकत भी बढ़ाएँ.

इन प्राकृतिक उपायों में सदियों से इस्तेमाल होने वाला गुड़ आज भी सेहत के लिए उतना ही असरदार माना जाता है. आयुर्वेद में इसे 'शीत ऋतु का अमृत' तक कहा गया है. गुड़ न सिर्फ मीठा स्वाद देता है, बल्कि शरीर को कई तरह से पोषण भी प्रदान करता है. यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहरों तक, ठंड बढ़ते ही बाज़ार में गुड़ की मांग तेज़ हो जाती है. गुड़ शरीर को प्राकृतिक रूप से गर्म रखने में मदद करता है.

ठंड के मौसम में अक्सर हाथ-पैर सुन्न होना, रक्त संचार की कमजोरी, जोड़ों में अकड़न या सर्दी-जुकाम की शुरुआत जैसी समस्याएँ हो जाती हैं. गुड़ में मौजूद आयरन, पोटैशियम, मैग्नीशियम और एंटीऑक्सीडेंट तत्व शरीर में रक्त संचार को बेहतर करते हैं, जिससे ठंड का असर कम होता है. यही वजह है कि ग्रामीण इलाकों में सुबह-सुबह गुड़ के साथ तिल या मूंगफली खाने की परंपरा आज भी जीवित है. सर्दियों में गुड़ का सेवन पाचन शक्ति को भी मजबूत बनाता है.

मक्का उत्पादन बना मजबूत सहारा

भारत में कॉर्न यानी मकई की खेती परंपरागत फसलों के बीच तेजी से अपने पैर पसार रही है. पहले इसे सीमित क्षेत्रों तक ही देखा जाता था, लेकिन अब देशभर में किसान बड़े पैमाने पर कॉर्न उत्पादन की ओर आकर्षित हो रहे हैं. इसकी वजह सिर्फ बढ़ती बाजार मांग नहीं है, बल्कि यह भी है कि मकई एक ऐसी बहुउपयोगी फसल है जिसे खाद्य उद्योग, पशुपालन, तेल उत्पादन, बायो-फ्यूल, स्टार्ट उद्योग और निर्यात हर जगह बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है.

यही कारण है कि किसान इसे सुरक्षित और लाभकारी विकल्प मानने लगे हैं. कॉर्न की खेती में लागत भी अपेक्षाकृत कम आती है. अच्छा बीज, हल्की सिंचाई, संतुलित खाद और नियमित कीट-नियंत्रण अपनाने पर किसान कम मेहनत में बेहतर उपज प्राप्त कर लेते हैं. आधुनिक तकनीकों के आने से यह खेती और आसान हो गई है. आज अधिकांश किसान ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग और उन्नत किस्मों के बीज का उपयोग कर रहे हैं, जिससे उत्पादन क्षमता काफी बढ़ी है. सामान्यत: एक एकड़ भूमि में 25-30 क्विंटल तक की उपज प्राप्त हो जाती है, और उचित बाजार मिलने पर किसान 20,000 से 35,000 रुपये तक का लाभ आसानी से कमा लेते हैं. कॉर्न की मांग इतनी ज्यादा है कि किसान को अपनी उपज बेचने में दिक्कत लगभग नहीं आती. देश में पशु चारा उद्योग तथा कॉर्न-आधारित मिलों की संख्या लगातार बढ़ रही है. डेयरी सेक्टर में मक्के का उपयोग बड़े पैमाने पर होता है, जिससे इसकी खरीद पूरे वर्ष जारी रहती है.

इसके अलावा फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री—पॉपकॉर्न, कॉर्न फ्लोर, कॉर्न स्टार्च, कॉर्न सिरप, स्नैक्स और कॉर्न ऑयल के उत्पादन में भी बड़ी मात्रा में मकई का उपयोग करती है. इन सभी कारणों से कॉर्न किसानों को स्थिर आय का भरोसा मिलता है. सरकार भी कॉर्न उत्पादन बढ़ाने को लेकर काफी गंभीर है. कई राज्यों में किसानों को उन्नत बीज, तकनीकी प्रशिक्षण, अनुदान और वैज्ञानिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जा रहा है.

मछली पालकों के लिए जरूरी उपाय

मछली पालन करने वाले किसानों के लिए सर्दी का मौसम हमेशा चुनौती लेकर आता है. पानी का तापमान घटते ही मछलियाँ सुस्त हो जाती हैं, भोजन कम खाती हैं और बीमारी का खतरा बढ़ जाता है. ऐसे में यदि मछली पालक कुछ विशेष कदम सावधानी से अपनाएँ, तो ठंड में भी उत्पादन और आय दोनों को सुरक्षित रखा जा सकता है.

यह मौसम प्रबंधन की परीक्षा भी है और अवसर भी क्योंकि जो किसान सही तरीके अपनाते हैं उन्हें अगले मौसम में तेज़ वृद्धि और अधिक लाभ मिलता है. सबसे पहले तालाब के तापमान पर ध्यान देना आवश्यक है. सर्दियों में पानी तेजी से ठंडा होता है, इसलिए मछली पालक तालाब को कम से कम एक हिस्से में गहरा रखें जहाँ प्राकृतिक गर्माहट बनी रहती है. सुबह के समय तालाब में धूप पहुँचने की व्यवस्था भी फायदेमंद होती है. अगर तालाब के किनारे अधिक झाड़ियाँ या पेड़ हैं, तो उनकी कटाई करने से धूप का प्रवेश बेहतर हो जाता है. ठंड के दौरान पानी में ऑक्सीजन की कमी होना आम बात है, इसलिए एरेटर चलाना या सुबह तालाब की हल्की जुताई कर पानी को हिलाना—दोनों मछलियों को सक्रिय रखते हैं. आहार प्रबंधन सर्दियों का सबसे संवेदनशील हिस्सा है. मछलियाँ इस मौसम में अधिक खाना नहीं खातीं, इसलिए किसान दाना कम मात्रा में और दिन के गर्म समय 10 बजे से 3 बजे के बीच ही दें.

सर्दियों में फंगल और बैक्टीरियल रोग तेजी से पनपते हैं, इसलिए मछली पालकों को हर 10-15 दिन में पानी की गुणवत्ता जांचनी चाहिए. पीएच स्तर 7 से 8 के बीच रहे. यदि किनारों पर काई अधिक बढ़ने लगे, तो उसे तुरंत साफ करना चाहिए ताकि पानी प्रदूषित न हो. हानिकारक जीवों से बचाव के लिए तालाब के चारों ओर जाल लगाना भी जरूरी है. इसके अलावा, यदि किसान बीज डालने या नए तालाब की तैयारी का विचार कर रहे हों, तो सर्दी इसका उचित समय नहीं है. यह मौसम केवल रखरखाव, सावधानी और प्रबंधन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है.

मशरूम खेती से किसानों की बढ़ेगी आय

मशरूम की खेती आज किसानों के लिए आय बढ़ाने का एक मजबूत और आधुनिक विकल्प बनकर उभर रही है. कम ज़मीन में ज्यादा उत्पादन, कम समय में फसल तैयार होना और लगातार बढ़ती बाजार-मांग की वजह से यह खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही है. एक सामान्य किसान केवल 100 वर्गफुट से भी शुरुआत कर सकता है और 30-45 दिनों के एक उत्पादन चक्र में अच्छा मुनाफा कमा सकता है.

मशरूम की खेती शुरू करने में लगभग 25,000 से 60,000 तक की लागत आती है, जिसमें स्पॉन (बीज), भूसा, बैग्स, नमी नियंत्रण व्यवस्था और कमरे का सेटअप शामिल होता है. छोटे स्तर पर भी 500 बैग लगाने पर हर चक्र में लगभग 500 किलो तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है. वर्तमान बाजार में मशरूम की कीमत 150 से 250 प्रति किलो के बीच रहती है, जिससे किसानों को प्रति चक्र 30-40% तक का लाभ मिलता है. स्वास्थ्य-केन्द्रित खानपान बढ़ने के कारण इसकी मांग तेज़ी से बढ़ रही है. होटल-रेस्टोरेंट, प्रोसेस्ड फूड और सुपरमार्केट की ज़रूरतें भी मशरूम की खेती को और लाभदायक बना रही हैं. आने वाले वर्षों में पौष्टिक आहार के रूप में मशरूम की खपत और भी तेजी से बढ़ने की संभावना है, जिससे किसानों के लिए यह एक स्थायी आमदनी का साधन बन सकता है.

सरकार भी मशरूम खेती के विस्तार को लेकर काफी जागरूक है. नेशनल हॉर्टिकल्चर बोर्ड, कृषि विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र जैसी संस्थाओं के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षण, तकनीकी सलाह, सब्सट्रेट तैयारी की जानकारी, स्पॉन उत्पादन प्रशिक्षण और कई जगहों पर सब्सिडी तक उपलब्ध कराई जाती है. कई राज्यों में आधुनिक मशरूम यूनिटों के लिए वित्तीय सहायता देने की योजनाएँ चल रही हैं. कृषि विश्वविद्यालय लगातार किसानों के लिए वर्कशॉप और स्किल-डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित कर रहे हैं, जिससे नए किसान भी आसानी से प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें. कुल मिलाकर, मशरूम की खेती कम लागत, तेज़ उत्पादन और बढ़ती मांग की वजह से किसानों के लिए एक बड़ा अवसर बनकर उभरी है.